पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली

खण्ड–XXIX अंक–14 31 जुलाई, 2024

बंदऊँ प्रथम महीसुर चरना। मोह जनित संसय सब हरना।
सुजन समाज सकल गुन खानी। करऊँ प्रनाम सप्रेम सुबानी।।

पहले पृथ्वी के देवता ब्राह्मणों के चरणों की वन्दा करता हूँ, जो अज्ञान से उत्पन्न सब संदेहों को हरने वाले हैं। फिर सब गुणों की खान संत–समाज को प्रेम सहित सुन्दर वाणी से प्रणाम करता हूँ। **–श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड/2**

नए विद्यार्थियों का हार्दिक स्वागत

प्रिय विद्यार्थियों,

प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण आईआईटी दिल्ली परिसर में आप सभी का हार्दिक स्वागत है! आपकी कड़ी मेहनत और आपके बेहतरीन प्रदर्शन के लिए आपको बधाई, जिसकी बदौलत आप यहाँ पहुँचे हैं। आप उन चुनिंदा लोगों में से हैं, जिन्होंने हमारे 2024 के बैच में अपना स्थान बनाया है।

हमारे संस्थान में, आपको एक सक्षम शैक्षणिक वातावरण, एक लचीला पाठ्यक्रम, अद्भुत साथी और वरिष्ठ, आकर्षक और सुविज्ञ संकाय और स्टाफ सदस्य मिलेंगे। व्याख्यान, ट्यूटोरियल और कक्षा में आपसी सम्पर्क, प्रयोगशालाएँ, असाइनमेंट और परीक्षाएँ आपकी शैक्षणिक यात्रा का एक हिस्सा होंगे। आई.आई.टी. दिल्ली, आपको उत्कृष्ट सुविधाओं के साथ आपके सर्वांगीण विकास के लिए खेल, सांस्कृतिक, सह–पाठ्यचर्या और पाठ्येत्तर गतिविधियों के अवसर प्रदान करता है। आपको अत्याधुनिक शोध सुविधाएं, आधुनिक पुस्तकालय और उच्च–शक्ति कंप्यूटिंग संसाधनों तक पहुँच प्राप्त होगी। आपको ऐसे लोगों की मदद से अपनी रुचियों और जुनून को तलाशने, विकसित करने और आगे बढ़ाने के अवसर मिलेगें जो आपके समान ही उत्साहित हैं।

आप सभी इस नए वातावरण को खुले दिमाग से अपनाएँ और परिसर में उपलब्ध अवसरों का अधिकतम लाभ उठाएँ। हम आपकी अध्ययन यात्रा को सशक्त बनाने में हमेशा आपके साथ हैं। जब भी आपको किसी सहायता या सलाह की आवश्यकता हो, तो अपने मित्रों, वरिष्ठों, वार्डन या संकाय सदस्यों से संपर्क करने में संकोच न करें।

आप में से कई लोग पहली बार अपने घरों और अपने कम्फर्ट जोन से बाहर निकले होंगे, आपको संस्थान का परिसर घर से दूर परन्तु एक घर जैसा ही लगेगा, जहाँ हम आपको प्रवास में मदद करने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। मुझे यकीन है कि ये चार/पाँच वर्ष आपके जीवन के सबसे अच्छे और यादगार रहेंगे। मैं आपके भविष्य के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ,

प्रो. रंगन बनर्जी
निदेशक

उप निदेशकों के कार्यकाल का विस्तार

कुलसचिव कार्यालय से प्राप्त अधिसूचना सं. IITD/AREG/4/(3)/2024/299770 दिनांक 23 जुलाई, 2024 के अनुसार प्रो. टी. आर. श्रीकृष्णन, उप निदेशक (प्रचालन) तथा प्रो. अंबुज सागर, उप निदेशक (नीति एवं योजना) के कार्यकाल अवधि को अध्यक्ष, बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के अनुमोदन से पूववर्ती नियमों एवं शर्तों पर क्रमशः 25.07.2024 तथा 01.10.2024 से आगामी एक वर्ष के लिए बढ़ाया गया है।

स्वागत

- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2024/300666 दिनांक 25.07.2024 के अनुसार **डॉ. रौनक पुष्पक भट्टाचार्या** ने 09.07.2024 से संस्थान के यार्डी कृत्रिम बौद्धिकता स्कूल में सातवें वेतन आयोग के लेवल-12 में सहायक प्रोफेसर, ग्रेड-I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  डॉ. रौनक पुष्पक भट्टाचार्या को उनकी नियुक्ति के तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2024/300240 दिनांक 24.07.2024 के अनुसार **डॉ. राहुल कुमार** ने 15.07.2024 से संस्थान के रासायनिक इंजीनियरी विभाग में पोस्ट-डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग-II से प्राप्त कार्यालय आदेश सं. IITD/E-2/2024/298626 दिनांक 19.07.2024 के अनुसार **श्री योगेश कुमार त्रिपाठी** ने 11.07.2024 से संस्थान के स्थापना अनुभाग-II में सातवें वेतन आयोग के लेवल-6 में सहायक प्रशासनिक अधिकारी के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग-II से प्राप्त कार्यालय आदेश सं. IITD/E-2/2024/297565 दिनांक 16.07.2024 के अनुसार **श्री दयानन्द** ने 28.06.2024 से संस्थान के लेखा परीक्षा अनुभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल-5 में लेखा एवं लेखा परीक्षा सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग-II से प्राप्त कार्यालय आदेश सं. IITD/E-2/2024/299320 दिनांक 23.07.2024 के अनुसार **श्री कृष्ण कुमार** ने 09.07.2024 से संस्थान के छात्र कार्य अनुभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल-5 में प्रशासनिक सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

बधाई

स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2024/299135 दिनांक 22.07.2024 के अनुसार BOG संकल्प (सं. BG/58/2010) के अनुसार गठित निर्धारण समिति की सिफारिशों पर एवं अध्यक्ष अभिशासक परिषद की सहमति से संस्थान के निम्नलिखित संकाय सदस्यों को 01.07.2024 से उच्चत्तर अकादमिक ग्रेड (HAG) अर्थात वेतन लेवल-15, 1,82,200-2,24,100/-रू. प्रदान किया गया है।

क्र. सं.	संकाय सदस्य का नाम एवं कर्मचारी कोड	शैक्षिक इकाई
1.	प्रो. अतुल नारंग (16253)	जैव–रासायनिक इंजीनियरी एवं जैव–प्रौद्योगिकी
2.	प्रो. विजयराघवन एम. चारियार (16062)	ग्रामीण विकास एवं प्रौद्योगिकी
3.	प्रो. जय देव सिंह (15770)	रसायन विज्ञान
4.	प्रो. सुरेश भल्ला (16056)	सिविल इंजीनियरी
5.	प्रो. जोसमोन जैकब (16107)	पदार्थ विज्ञान एवं इंजीनियरी
6.	प्रो. सुबोध वसंत मोदक (16094)	यांत्रिक इंजीनियरी
7.	प्रो. जितेन्द्र प्रताप सिंह (16057)	भौतिकी
8.	प्रो. आर.के. वार्ष्णेय (15298)	भौतिकी
9.	प्रो. आर.एस. रंगासामी (15787)	वस्त्र एवं रेशा इंजीनियरी
10.	प्रो. दीप्ति गुप्ता (15768)	वस्त्र एवं रेशा इंजीनियरी

संस्थान समुदाय एवं हिन्दी कक्ष की ओर से उपरोक्त सभी संकाय सदस्यों को उच्चत्तर अकादमिक ग्रेड (HAG) मिलने पर बहुत-बहुत बधाई।

सेवानिवृत्तियाँ

संस्थान के निम्नलिखित संकाय/स्टाफ सदस्य अधिवर्षिता की आयु होने पर 31 जुलाई, 2024 को अपराह्न में संस्थान से सेवानिवृत्त हो रहे हैं :–

प्रो. जय देव सिंह, प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग

प्रो. जय देव सिंह ने 2 जून, 1997 को संस्थान में सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 31 जुलाई, 2002 में आपको सह प्रोफेसर तथा 26 अक्टूबर, 2006 में प्रोफेसर के पद पर नियुक्त किया गया। 1 जुलाई, 2024 में आपको उच्चतम अकादमिक ग्रेड (HAG) दिया गया।

आपने 1986 में लखनऊ विश्वविद्यालय से पीएच.डी. उपाधि प्राप्त की। 1986 में आपने एक शोध वैज्ञानिक के रूप में काम करने के लिए राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में कार्यभार ग्रहण किया। तत्पश्चात, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान बॉम्बे में 1992 तक अनुसंधान सहयोगी के रूप में कार्य किया। आप MONBUSHO फेलोशिप (शिक्षा विज्ञान, खेल और संस्कृत मंत्रालय, जापान) के भी प्राप्तकर्ता रहे। आपने जापान में क्योटो विश्वविद्यालय के प्रो. सकाये यूइमेरा के साथ कार्य किया। तदुपरांत, आपने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली के रसायन विज्ञान विभाग में अनुसंधान सहयोगी (1995-1997) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। आपकी मौलिक और प्रायोगिक अनुसंधान गतिविधियां आर्गेनोमेटेलिक रसायन विज्ञान को कवर करती हैं और मुख्य रूप से ऑर्गेनो कैल्कोजैन रसायन विज्ञान पर केंद्रित हैं। हाल के वर्षों में आप विशेष रूप से परमाणु कचरा के उपचार के लिए गैर–जलीय और जलीय वातावरण में यूरेनिल आयन रसायन विज्ञान पर अनुसंधान और विकास में लगे हुए हैं। आपने 23 पीएच.डी. विद्यार्थियों और 15 एम.टेक. विद्यार्थियों का पर्यवेक्षण किया और उनमें से कई विद्यार्थी देश और विदेशों के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में शैक्षिक पदों पर कार्यरत हैं।

सौम्य स्वभाव के प्रो. जय देव सिह अपने संकाय सदस्यों, विद्यार्थियों एवं स्टाफ सदस्यों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय रहे हैं।

डॉ. श्रीराम हेगड़े, वरिष्ठ सिस्टम मैनेजर (एस.जी.), कम्प्यूटर सेवा केन्द्र

डॉ. श्रीराम हेगड़े ने 21 अप्रैल, 1992 को संस्थान में जूनियर प्रोग्रामर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।

अगस्त 1997 में आपको वरिष्ठ प्रोग्रामर के रूप में पदोन्नत किया गया। आपको 2005, 2014 एवं 2017 में क्रमशः वरिष्ठ सिस्टम प्रोग्रामर, वरिष्ठ सिस्टम प्रोग्रामर (एस.जी.) तथा वरिष्ठ सिस्टम मैनेजर (एस.जी.) के रूप में पदोन्नतियां कम्प्यूटर सेवा केन्द्र के माध्यम से मिली तथा आप अनुप्रयुक्त यांत्रिकी विभाग में नियुक्त रहे। हालांकि, आपने CAD/CAE/FEM/CFD सॉफ्टवेयर सपोर्ट के क्षेत्र में कम्प्यूटर सेवा केन्द्र में योगदान दिया है और पिछले 8 वर्षों तक आपने कम्प्यूटर सेवा केन्द्र में भर्ती समन्वयक के रूप में भी काम किया।

आपने अनुप्रयुक्त यांत्रिकी विभाग में आई.टी. सहयोग में योगदान किया तथा शिक्षण एवं अनुसंधान मार्गदर्शन में भी शामिल रहे हैं। आपने 4 पीएच.डी. विद्यार्थियों, 45 एम.टेक. तथा दर्जनभर बी.टेक. विद्यार्थियों का उनके संबंधित प्रोजेक्टों में मार्गदर्शन किया। आपने 04 पुस्तकें एवं कई जर्नल पेपर्स लिखे। अपने कार्यकाल के दौरान आपने कई प्रायोजित अनुसंधान एवं परामर्श परियोजनाएं की हैं।

विनम्र स्वभाव के डॉ. श्रीराम हेगड़े अपने संकाय सदस्यों, विद्यार्थियों एवं स्टाफ सदस्यों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय रहे हैं।

श्री दितपाल सिंह (26466), सहायक प्रशासनिक अधिकारी, प्रबन्ध अध्ययन विभाग

श्री दितपाल सिंह ने 24 जनवरी, 1990 को संस्थान में ग्रुप 'डी' अटेन्डेन्ट के रूप में वेतनमान 750-940/2650-4000/–रु. में कार्यभार ग्रहण किया। 01 फरवरी, 1998 को आर.सी.डी.एस. के अन्तर्गत 3050-4590/–रु. के वेतनमान में चयनित किया गया तथा 04 अक्टूबर, 1999 में ग्रुप 'डी' से 'सी' में अवर श्रेणी लिपिक के रूप में नियोजित किया गया। 16 जनवरी, 2002 में आपको वरिष्ठ सहायक के रूप में मैप तथा प्रवर श्रेणी लिपिक (भण्डार) के रूप में नियुक्त किया गया। 16 जनवरी, 2012 में एम.ए.सी.पी के अन्तर्गत आपको उन्नयन दिया गया तथा 16 जनवरी, 2022 में ग्रेड वेतन 4600/–रु. में उन्नयन दिया गया। 22 दिसम्बर, 2022 में आपको आर.ऐन्ड पी. आर. के अन्तर्गत प्रशासनिक सहायक के रूप में पुनर्पदनामित तथा 16 मार्च, 2023 को इसी योजना में डी.पी.सी. के अन्तर्गत सहायक प्रशासनिक अधिकारी के रूप में पदोन्नत किया गया। मृदु स्वभाव के श्री दितपाल सिंह एक कर्मठ एवं योग्य सहायक प्रशासनिक अधिकारी रहे हैं।

श्रीमती मीरा देवी (50719), अटेन्डेन्ट, सिविल इंजीनियरी विभाग

श्रीमती मीरा देवी ने 02 जून, 1998 में संस्थान में ग्रुप 'डी' अटेन्डेन्ट के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 01 सितम्बर, 2008 में आपको आर.सी.डी.एस. के अन्तर्गत 5200-20200/-रू. ग्रेड वेतन 1900/रू. में उन्नयन दिया गया। 01 सितम्बर, 2018 में आपको एम.ए.सी.पी. के अन्तर्गत वेतन मेट्रिक्स (21700-69100) लेवल–3 में उन्नयन दिया गया। विनम्र स्वभाव की श्रीमती मीरा देवी एक मेहनती एवं कर्मठ अटेन्डेन्ट रही हैं।

स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति

प्रो. प्रेम कुमार कालरा, प्रोफेसर, कम्प्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग

प्रो. प्रेम कुमार कालरा ने 15 दिसम्बर, 1997 को संस्थान में सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 13 जनवरी, 2000 में आपको सह प्रोफेसर तथा 26 अक्टूबर, 2006 में प्रोफेसर के रूप में पदोन्नत किया गया। प्रो. कालरा ने 5 जुलाई, 2024 को संस्थान से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ली है।

सौम्य स्वभाव के प्रो. प्रेम कुमार कालरा अपने संकाय सदस्यों, विद्यार्थियों एवं स्टाफ सदस्यों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय रहे हैं।

संस्थान समुदाय उपरोक्त संकाय/स्टाफ सदस्यों को भावभीनी विदाई देते हुए उनके व उनके परिवार के लिए सुख, समृद्धि एवं शांतिमय जीवन की कामना करता है।

अभय भूमि है भारत, परंपरा बनी देश की संजीवनी; यहाँ है विश्व की सर्वोत्तम संस्कृति

–डॉ. सच्चिदानंद जोशी

भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूर्ण होने का उत्सव प्रारंभ हो चुका है। सभी अपनी–अपनी उपलब्धियां स्वतंत्रता के इस पर्व को समर्पित कर रहे हैं। यह स्वतंत्रता के लिए हुए संघर्ष की गाथाओं को याद करने का दौर है। आज भारत की जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग ऐसे व्यक्तियों का है जिन्होंने आजादी के संघर्ष के बारे में सिर्फ सुना और पढ़ा ही है। ऐसे में भारत की स्वतंत्रता के लिए जन–जन द्वारा किए गए संघर्ष तथा लाखों लोगों के तप एवं बलिदान के बारे में देश को संवेदनशील बनाना समय की आवश्यकता है। जिस पीढ़ी ने प्रत्यक्ष गुलामी भोगी ही न हो या जिसने सीधे–सीधे अस्तित्व के लिए संघर्ष न किया हो, उस पीढ़ी को उन बातों का एहसास दिलाना चुनौती भरा कार्य है।

विश्व की सर्वोत्तम संस्कृति

भारत का इतिहास और अस्तित्व हजारों साल पुराना है। इसलिए इसकी अस्मिता को कुछ 100 वर्ष की गुलामी तथा 75 वर्ष की स्वतंत्रता के इतिहास में सीमित कर नहीं देखा जा सकता। यह समय भारत के 'विराट तत्व' का साक्षात्कार करने का है। विष्णु पुराण में उद्धरित है–

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चौव दक्षिणम्। वर्षे तद् भारतं नाम भारती यत्र संततिः। (विष्णुपुराण 2.3.1)

अर्थात समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में जो देश है उसे भारत कहते हैं तथा उसकी संतानों (नागरिकों) को भारती कहते हैं।

जिस पीढ़ी को इतिहास के अध्यायों में यह बार–बार रटवाया गया हो कि भारत को एक करने का श्रेय अंग्रेजों को जाता है या यह कि भारत की अस्मिता एक देश के रूप में पहले थी ही नहीं, उनके लिए यह श्लोक आंखें खोल देने वाला हो सकता है। इस श्लोक में उद्धरित भारत की परिसीमाएं हाल के वर्षों में किसी खगोलशास्त्री द्वारा दी गई परिसीमा नहीं हैं, बल्कि आज से हजारों साल पहले लिखे गए तथा उससे पूर्व में स्मरण किए गए भारत नामक राष्ट्र की परिसीमा है। यह उस भारत देश की परिसीमा का वर्णन है जहां की विद्वता तथा सांस्कृतिक परंपरा पूरे विश्व में सर्वोत्तम थी और जहां ज्ञान प्राप्ति के लिए पूरे जगत से लोग आते थे।

समूचे विश्व की प्रेरक भूमि

विडंबना यह है कि भारत की उस गौरवशाली सांस्कृतिक परंपरा, जिसमें अध्यात्म, दर्शन, ज्ञान, विज्ञान, शिल्प, स्थापत्य, सौंदर्यबोध, कला, वस्त्र, भोजन जैसे अनेक गुणों का समावेश है, को गुलामी के वर्षों में षड्यंत्रपूर्वक भुलाने का प्रयास किया गया। प्राचीन भारतीय इतिहास पर यदि हम दृष्टिपात करें तो देखते हैं कि भारत की यह सभी परंपराएं और ज्ञानधाराएं न सिर्फ अक्षुण्ण बनी रहीं बल्कि समय–समय पर संवर्द्धित होती रही हैं। ऐसे अनेक उदाहरण हम भारत के इतिहास से सीख सकते हैं जिसमें भारत ने न सिर्फ अपने अस्तित्व को समृद्ध किया, बल्कि समूचे विश्व को लाभान्वित भी किया है। प्रसिद्ध मानवविज्ञानी विल डुरांट ने जब भारत की इस प्राचीन समृद्ध संस्कृति का वर्णन किया है तो उन्होंने स्वीकार किया कि इस नाते भारतभूमि समूचे विश्व की प्रेरक भूमि रही है तथा सबने इसी से प्रेरणा ग्रहण कर विकास की दिशा पाई है।

अद्भुत पराक्रम का परिणाम

कालांतर में अपने नैसर्गिक मानवीय गुणों के कारण, जिसमें उदारता, सर्वसमावेशिकता, मित्रता तथा समभाव सम्मिलित है, भारत को एक राष्ट्र तथा एक विकसित समाज के रूप में कई वैश्विक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। ये चुनौतियां इसलिए भी आईं क्योंकि भारतीय अपने स्वभावगत औदार्य के कारण आगंतुकों के कुटिल भावों को पहचान नहीं पाए तथा भावावेश में सर्वोत्तम आतिथ्य का प्रदर्शन करते रहे। 'वसुधैव कुटुंबकम' की अवधारणा वाले भारतवर्ष ने कभी बलपूर्वक विश्व विजेता बनने का सपना नहीं देखा। विश्व विजेता बनने का स्वप्न लेकर आने वाले कई विदेशी आक्रांताओं का स्वप्न भी इसी भारतभूमि में आकर चूर–चूर हुआ। यह भारत के सांस्कृतिक दर्शन के साथ–साथ सम्मिलित अद्भुत पराक्रम का ही परिणाम था कि भारत इन आक्रांताओं का मुकाबला कर सका, लेकिन अपने अतिरिक्त औदार्य और विश्वास की पराकाष्ठा के कारण 16 बार हराने के बावजूद पृथ्वीराज चौहान को 17वीं बार मुहम्मद गोरी से पराजय झेलनी पड़ी तथा अपने औदार्य के प्रतिदान में उन्होंने मुहम्मद गोरी की अमानवीय कुटिलता को झेला।

परंपरा बनी देश की संजीवनी

अपने अद्भुत ऐश्वर्य तथा सामर्थ्य के कारण भारतभूमि विश्व के दूसरे देशों के लिए कौतूहल और ईर्ष्या का विषय बनी रही। परिणामस्वरूप इस पर कई आक्रमण हुए। अपने शौर्य और पराक्रम से इन आक्रमणों का मुकाबला करने के बावजूद भारत अपनी सांस्कृतिक विरासत के कारण छल–कपट नहीं कर पाया और कई बार पराजित भी हुआ। यह एक विचित्र ही दर्शन है कि भारत में जो भी लूट करने की नीयत से आया, उसने भी भारतभूमि में अपना स्थायी निवास ही बना लिया। उन्होंने भारत को आर्थिक रूप से कमजोर तो किया ही साथ ही भारत की संस्कृति को भी नष्ट करने के प्रयास किए। इस दौरान ऐसी कई सामाजिक कुरीतियों ने जन्म लिया जो इससे पहले भारत में कभी नहीं थीं। यह भारत के लिए एक चुनौती का ही समय था जब अपने अस्तित्व और संस्कृति की रक्षा करने के साथ ही भारत को अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करना था। तब भारत के लिए सबसे बड़ी संजीवनी भारतीय सांस्कृतिक परंपरा और बौद्धिकता ही थी।

आजादी का मजबूत आधार

मध्यकाल में जबकि भारत के एक बड़े भू–भाग पर मुगलों का शासन था, तब भी भारत के लिए सांस्कृतिक प्रेरणा देने का कार्य भक्ति आंदोलन के माध्यम से हुआ। जो लोग भक्ति आंदोलन को सिर्फ आध्यात्मिकता से जोड़कर देखते हैं वो दरअसल इस आंदोलन के पीछे छिपी गहरी प्रेरक शक्ति का आकलन करना भूल जाते हैं। भक्ति आंदोलन के माध्यम से वैचारिक जागरण और राष्ट्र चेतना का प्रसार महत्वपूर्ण तथा उस काल के लिए अनिवार्य था। भक्ति आंदोलन भारत की बौद्धिक मेधा द्वारा चलाया जाने वाला एक सांस्कृतिक आंदोलन था, जो संकट काल में भारतवासियों को उनके मूल तत्व तथा राष्ट्र गौरव का स्मरण करा रहा था। मुगलों के बाद जैसे–जैसे अंग्रेजों का आधिपत्य भारत में बढ़ने लगा, वैसे–वैसे भारत में सांस्कृतिक पुनर्जागरण के विभिन्न आंदोलनों ने जन्म लिया।

भारत की आध्यात्मिकता तथा दर्शन ऐसी प्रमुख शक्ति बनी, जिसने भारतीयों के मनोबल को ऊंचा उठाने तथा उनके अंदर राष्ट्र के प्रति निष्ठा का भाव जगाने का कार्य किया। भारत में इस दौरान उपजे आंदोलन विश्व में भी अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाते चले गए। स्वामी विवेकानंद तथा महर्षि अरविंद जैसे सांस्कृतिक पुरुषों ने भारत के विराट तत्व को पहचानते हुए विश्व में उसका प्रेरणा आख्यान प्रस्तुत किया। स्वामी विवेकानंद का कथन था कि 'हमें गर्व है कि हम अनंत गौरव की स्वामिनी इस भारतीय संस्कृति के वंशज हैं, जिसने सदैव दम तोड़ती मानवजाति को अनुप्राणित किया।'

भारत में गुलामी के प्रतिकार के रूप में सांस्कृतिक परंपराओं को पुनर्जीवित कर राष्ट्र जागरण के कार्य को लोकमान्य तिलक जैसे दृष्टा नेताओं ने अंजाम दिया।

भारत का वैश्विक दृष्टिकोण तथा भारत में अंतर्निहित एकत्व की भावना ही वे प्रेरक तत्व रहे, जिन्होंने चुनौती के समय मनोबल बढ़ाने तथा प्रतिकार करने की शक्ति देने का कार्य किया। लोकमान्य तिलक, महर्षि अरविंद और वीर सावरकर जैसे संस्कृति, अध्यात्म और धर्म की ध्वजा को मजबूती से फहराने वाले सेनानी भारत में ऐसी आजादी का स्वप्न लेकर संघर्ष कर रहे थे जिसका आधार भारत की अपनी संस्कृति और वैभव पर टिका हो। सावरकर का यह कथन गौर करने योग्य है कि –'परतंत्रता तथा दासता को प्रत्येक धर्म ने सर्वदा धिक्कारा है। धर्म के उच्छेद और ईश्वर की इच्छा के खंडन को ही परतंत्रता कहते हैं।'

जयघोष के लिए जरूरी चिंतन

आज जब हम स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूर्ण करने की ओर अग्रसर हैं तब हमें निश्चित तौर पर भारत के विराट को समझने व भारत की सांस्कृतिक अस्मिता को अपने दैनिक चिंतन में लाने की महती आवश्यकता है। हमें इस सोच से बाहर निकलकर कि भारत का अस्तित्व एक स्वतंत्र देश के रूप में 75 साल का है, इस विश्वास पर दृढ़ होना होगा कि भारत उस समष्टिगत चेतना का नाम है जिसका अस्तित्व कई हजार साल पुराना है।

भारत सांस्कृतिक और आध्यात्मिक रूप से विश्व गुरू के रूप में जाना जाता रहा है। भारत की मूल प्रेरक शक्ति उसका स्वाभिमान है जो कुछ 100 वर्षों की गुलामी से मिटाया नहीं जा सकता। हमें उस न्यूनताबोध से भी निकलना होगा जो गुलामी के वर्षों में हमारे अंदर षडयंत्रपूर्वक डाला गया। हमें पराधीनता के दुरूस्वप्न को सीमित कर स्वावलंबन के नए क्षितिजों का निर्माण करना होगा। यह भारत पर्व है। हमारा प्रयास हो कि यह सिर्फ स्वतंत्रता के उत्सव का पर्व न होकर गौरवशाली समृद्ध भारत के जयघोष का पर्व बने। हम सब अतीत के दुरूस्वप्न को भुलाकर ऐसे नवनिर्माण का संकल्प लें जिसमें विराट भारतीय संस्कृति और प्रगल्भ बौद्धिकता के दर्शन होते हों और जो विगत के पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर पुनः देवताओं को यह कहने के लिए बाध्य करें कि 'गायंति देवारू किल गीत कानि, ध्यानस्तु ते भारत भूमिभागे।'

–साभार दैनिक जागरण
दिनांक 30 अगस्त, 2021

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 7144

मुद्रकः सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली। ई–मेलः sagarprinters@gmail.com